International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(3): 19-21

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(3): 19-21
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 06-03-2018
Accepted: 07-04-2018

डॉ. वेद प्रकाश मिश्र
प्रोफेसर, संस्कृत विभागाध्यक्ष,
डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय,
करगी रोड़ कोटा, बिलासपुर,
छत्तीसगढ़, भारत

हिडमो राम मण्डावी
एम.फिल.संस्कृत, डॉ.सी.वी.रामन्
विश्वविद्यालय, करगी रोड़ कोटा,
बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

Correspondence
डॉ. वेद प्रकाश मिश्र
प्रोफेसर, संस्कृत विभागाध्यक्ष,
डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय,
करगी रोड़ कोटा, बिलासपुर,
छत्तीसगढ़, भारत

वेणीसंहार नाटक में पर्यावरण संचेतना

डॉ. वेद प्रकाश मिश्र, हिडमो राम मण्डावी

प्रस्तावना

प्रस्तुत शोध पत्र में वेणीसंहार नाटक में पर्यावरण संचेतना विषय का विवरण प्रस्तुत किया गया है। पर्यावरण प्रदूषण सम्पूर्ण जगत की एक विशेष चिंतनीय समस्या है जो सभी देशों के लिये गम्भीर चुनौती बनी हुई हैं। वर्तमान समय में बढ़ती हुई पर्यावरण प्रदूषण और इसके कारणों पर गम्भीरता से विचार कर रोकताम के जरूरी उपाय अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि वायु, जल, अग्नि, पृथ्वी, आकाश और अन्य जीवधारी प्राणी तत्व एक बार यदि विषाक्त और प्रदूषित हो जाये तो दुबारा इनका निर्माण करना मनुष्य की क्षमता से दूर हो जायेगा। अतः प्रदूषित और विषाक्त होने से रोकने हेतु यथा सम्भव कारगर उपाय खोजने होंगे इतना ही नही पर्यावरण प्रदूषण की समस्या के कारणों और उपायों पर गम्भीर विचार करना होगा।

वेणीसंहार नाटक में पर्यावरण संचेतना

संस्कृत साहित्य के वैदिक एवं लौकिक साहित्य में पर्यावरण चिन्तन ऋषियों एवं कवियों के द्वारा किया गया है। महाकवि भट्टनारायण ने अपने सम्पूर्ण साहित्य में पर्यावरण को अधिक महत्व प्रदान किया हैं। वेणीसंहार का पर्यावरण एक अनुठा एवं अनुपम हैं। प्राचीन संस्कृति के अध्ययन से यह ज्ञात होता है, हमारे ऋषि मुनियों के लिए मनुष्य एवं पर्यावरण दोनों ही अतिप्राचीन काल से चिन्तनीय विषय रहा हैं। ऋषियों का उददेश्य बाह्य प्रकृति में प्रविष्ट होकर तथा उससे भी परे परब्रह्म का अनुभव करना था। जब मनुष्य विशुद्वचित तथा आनन्द में समवर्तन करे तब 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' की अनुभूति होती हैं। इसी अनुभूति की प्राप्ति हमें प्राचीन संस्कृत साहित्य में देखने को मिलती हैं।

वैदिक यज्ञ उपासना कर्म का सीधा सम्बन्ध पर्यावरण की स्वच्छता से हैं। अग्नि पर्जन्य, सोम, मरूत, पृथ्वी, उषा, सविता, रात्रि आदि प्राकृतिक शक्तियां वैदिक ऋषियों के प्रमुख उपास्य देवता रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन काल में वैदिक ऋषि इन प्राचीन शक्तियों से परिचित थे, इन्ही प्राकृतिक शक्तियों को प्रसन्न करने के लिए एवं अपनी सुख शान्ति की प्राप्ति के लिए ऋषियों द्वारा वेदो में स्तुतियों का विधान किया गया हैं। हमें यह ज्ञात होता है कि पर्जन्य वर्षा के देवता हैं। वरूण जलों के स्वामी हैं। सविता प्राणों के संचालक हैं। सोम औषधियों के स्वामी हैं। इसी प्रकार पृथ्वी,वायु,अग्नि, रात्रि,उषा आदि सभी वैदिक देवता किसी न किसी रूप में प्राणियों के हितो से संबंधित हैं। यद्यपि प्राचीनकाल में पर्यावरण संबंधित कोई समस्या नही थी। किन्तु फिर भी पर्यावरण के सम्बन्ध में हमारे वैदिक ऋषियों के चिन्तन एवं मनन अत्यन्त गुण एवं तथ्यपूर्ण रहा हैं।

> 'द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः
> शान्तिरोशधयः शान्तिः।
> वनस्पतयः शान्तिर्विरवे देवाः शान्तिब्रह्वा शान्तिः।
> सर्व शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि।। [1]

अर्थातः भूमि, जल, वायु, अग्नि और आकाश यह पॉच तत्व प्राकृतिक है इनके संरक्षण के लिए वेदों में भी वर्णन प्राप्त होता हैं।

पर्यावरण के साथ मानव का पुराना सम्बन्ध है सभ्यता के विकास के साथ–साथ मनुष्य भौतिक और औद्योगिक विकास की अन्धी दौड़ में प्रकृति को जीतने का प्रयास करने लगा जिसके कारण पर्यावरण का भरपूर दोहन हुआ। समस्त प्राणी,वनस्पति जगत एवं पर्यावरण से मनुष्य का सम्बन्ध प्राचीन काल से हैं। जिसका चित्रण भारतीय लौकिक संस्कृत साहित्य में मिलता हैं। संस्कृत साहित्य के कवियों ने हरी भरी वसुन्धरा उसके लहलहाते फूल गरजते बादल नृत्य करते मोर कलकल बहती नदियां हरे–भरे

वृक्ष और लताओं को देव तुल्य माना गया है। पेड़–पौधों लताओं को सजीव और जीवंत मानने का प्रमाण रामचरितमानस में इस प्रकार मिलता है–

हे खग! मृग हे मधुकर श्रेणी
तुम देखी सीता मृगनयनी।।[2]

अर्थातः तुलसीदास जी रामचरित मानस में कहते है कि सीता जी को खोजते हुए श्रीराम मार्ग में पेड़– पौधों से पूछते हैं कि तुमने सीता को देखा क्या।
अतः पर्यावरण का वृहत मार्मिक चित्रण महाकवि भट्टनारायण ने अपने नाटक वेणीसंहार में प्रस्तुत किया है जिसका वर्णन इस शोध पत्र में किया जायेगा जो पर्यावरण संरक्षण एवं संचेतना के विकास में सहायक सिद्ध होगा। महाकवि भट्टनारायण परम्परावादी कवि नही है उन्होंने पर्यावरण चित्रण में जैसा देखा पाया और अनुभव किया वैसा ही वर्णन किया है। वेणीसंहार में पर्यावरण का मानवीयकरण अधिक किया गया है। यहॉ प्रकृति मानव का रूपधारण करके रंगमंच पर आती है और रंगमंच के पात्रों के साथ सुख–दुःख का अनुभव करते हुए सहानुभूति प्रकट करती है। अतः महाकवि भट्टनारायण के वेणीसंहार में पर्यावरण का स्वरूप इस प्रकार दृष्टव्य हैं।

जैसेः पर्वत, वन, वृक्ष, पुष्प, ऋतुऍ, पृथ्वी एवं वायु , नदी, वन्य प्राणी व जीव–जन्तु आदि।

पर्वतः पर्वतों का उल्लेख वेणीसंहार नाटक में प्राप्त होते हैं। पर्वत हमेशा से ही हमारी शान रही हैं, क्योंकि नदियों का उदगम पर्वतों से ही होता हैं। पर्वत एक दृढ निश्चय व संकल्प की प्रेरणा देते हैं। सदियों से हमारे ऋषि मुनियों ने पर्वतों को अपनी साधना का स्थल माना हैं। कुछ पर्वत जिनका उल्लेख वेणीसंहार नाटक में मिलता है वे इस प्रकार है–

दारूपर्वतः वेणीसंहार नाटक में दारूपर्वत का वर्णन मिलता हैं। इस पर्वत में वायु की गति बहुत तेज कही गई हैं। इस पर्वत के सम्बन्ध में किम्वदन्ती हैं कि इस पर जाने से सारे मनोरथ पूर्ण होते हैं। यहॉ का मार्ग अत्यन्त दुर्गम बताया गया हैं–

''दारूपर्वतप्रसादम् उद्वेगकारी खल्पयमुत्थितपरूषरजः कलुषीकृतनयन
विदलित–तरूवर–शब्द–वित्रस्त–मन्दुरापरिभ्रष्टवल्लभ–तुर ड.गम–पर्याकुलीकृत–जन–पद्वतिर्भीषणः समीरणाऽऽसारः''[3]

गन्धमादन पर्वतः वेणीसंहार के षष्ठम अंक में द्रौपदी को जब ये सूचना प्राप्त होती है कि भीमसेन का वध हो गया है। तब द्रौपदी कहती है कि–

हा णाह भीमसेन ! हामह परिभवपडीआरपरिच्चत्तजीविअ! जडासुर–बअ–हिडिम्ब – किम्मीर – कीचअ – जरासंध – णिसूदण! सोअन्धिआहरण – चाडुआर!देहि मे पडिवअणम्।[4]

अर्थातः हे नाथ! भीम मेरे तिरस्कार का बदला लेने के लिए अपने प्राण देने वाले जटासूर, बक हिडिम्ब, कीचक तथा जरासन्ध का वध करने वाले इतना ही नही गंधमादन पर्वत पर होने वाले स्वर्ण कमल अर्थात सोने के कमल को लाकर मुझे प्रसन्न करने वाले इससे ये स्पस्ट होता है कि गंधमादन पर्वत में स्वर्ण कमल प्राप्त होते होंगे।

2 वनः महाभारत कथा वन पर आधारित है क्योंकि इसमें अज्ञातवास व वनवास आदि का उल्लेख मिलता है। जुएं में हार के बाद पाण्डवों को 12 वर्ष का वनवास व एक वर्ष का अज्ञातवास का पालन करना पडा था। इस प्रकार वन का संबंध महाभारत में प्रगाढ रूप से दृष्टिगोचर होता है। खाण्डव वन को पाण्डवों द्वारा इन्द्रप्रस्थ बनाने का उल्लेख भी मिलता है।

प्रमदवनः प्रमदवन का उल्लेख प्रायः संस्कृत के सभी नाटकों में होता है यह स्थान रमणीय और फूलों की सेज से सजा हुआ होता है, जहॉ नायक और नायिका प्रेम प्रणय करते है। वेणीसंहार नाटक में प्रमदवन का उल्लेख प्राप्त होता हैं।

3. वृक्षः वृक्ष के बिना वन की कल्पना निरर्थक है। महाभारत काल में वृक्ष असंख्य रहे होंगे इसमें कोई सन्देह नही है। क्योंकि धरातल में जो वनस्पति, वृक्ष, फूल इत्यादि है वे पृथ्वी के लिए वनदेव के समान है जैसे– तुलसी, मदहा, पीपल, बरगद, नारियल इत्यादि में देवी–देवताओं का निवास माना गया है। प्राचीन काल से ही वृक्षों में देवों का वास माना गया है तब से लेकर अब तक वृक्षों को देवतुल्य पूजा जाता हैं।

4. पुष्पः वेणीसंहार नाटक में पर्यावरण का भरपूर संगम प्राप्त होता हैं। पुष्पों के अलग–अलग प्रकार देखने को मिलते हैं जैसे– सप्तपर्ण, कुमुद, कमल, काशपुष्प, शेफालिका पुष्प श्वेतकमल आदि।

प्रालेयमिश्रयकरन्दकरालकोशैः
पुष्पैः समं निपतिता रजनीप्रबुद्धैः।
अर्काशुभिन्नमुकुलोदर सान्द्रगन्ध–
संसूचितानि कमलान्यलयःपतन्ति।।[4]

अर्थात् रात्रिकाल में खिले हुए हिमकणमिश्रित पुष्परस से विषम मध्यभाग वाले फूलों के साथ गिरे हुए भौरें ,सूर्य की किरणों से खिली हुई कलियों के अन्तर्भाग की तीव्र गन्ध से प्रतीत होने वाले कमलों पर गिर रहे हैं।

5. शरद ऋतुः इसी चन्द्रमा के प्रकाश नक्षत्रों,क्रौंच तथा हंस कुलों से और सप्तपर्ण कुमुद–कमल काशपुष्पों के परागों से धवलित गगन तथा दिशामण्डल वाले स्वादिष्ट जल–जलाशयों वाले शरत्काल का आश्रय लेकर संगीत प्रारम्भ किया जाय। क्योंकि इस शरद ऋतु में–

सत्पक्षा मधुरगिरः प्रसाधिताशा मदोद्धतारम्भाः
निपतन्ति धार्तराष्ट्राः कालवशान्मेदिनीपृष्ठे।।[5]

शरत काल में सुन्दर पंखों वाले मधुर कलरव करने वाले, दिशाओं को शोभित करने वाले,अत्यन्त मतवाले कार्य करने वाले काली चोंच तथा काले चरणों वाले विशेष प्रकार के हंस धरातल पर उतर रहे हैं।

6. पृथ्वी एवं वायुः महाकवि भट्टनारायण कृत नाटक में पृथ्वी एवं वायु का सुन्दर वर्णन प्राप्त होता है–

दिक्षु व्यूढ़ाडि.घ्रपाड.गस्तृणजटिलचलत्पांसुदण्डोऽन्तरिक्षे
झाड.कारी शर्करालः पथिषु विटपिनां स्कन्धकार्षैः सधूमः।
प्रसादानां निकुन्जेष्वभिनवजलदोद्गारगम्भीरघोर
श्रण्डारम्भः समीरो वहति परिदिशं भीरू! किं सम्भ्रमेण।। [6]

अर्थात्ः चारो ओर वृक्षों की शाखाओं को फैला देने वाला आकाश में घास फूस से युक्त दण्ड के आकार धूल को उडाने वाला झॉय–झॉय करता हुआ मार्गो में रेत कंकडों से युक्त वृक्षों के तनों

से रगडने के कारण निकलते हुए धुँये का वाला ऊँचे–ऊँचे भवनों की कुंजो में नवीन मेघ के समान और गम्भीर ध्वनि करने वाला प्रचण्ड पवन चारों ओर बह रहा हैं।

7. नदीः महाकवि भट्टनारायण ने अपनी कृति वेणीसंहार में नदियों का विस्तृत उल्लेख नही किया परन्तु नदियों के नामों का अवश्य जिक्र किया जिनका विवरण इस प्रकार है– सरस्वती नदी,यमुना नदी,चित्रोत्पला नदी,सतलुज नदी आदि। नदियों को माता का दर्जा दिया जाता है। नदियां हमेशा से ही पूज्यनीय व जीवनदायिनी रही है।

सरस्वती नदीः सरस्वती नदी का वर्णन महाकवि भट्टनारायण ने षष्ठम अंक में इस प्रकार किया है– सरस्वती शिशिरतरड.गस्पृशा मारूता चानेन विगत क्लमो भविष्यामि। [7]

अर्थात्: इस छाया से ही सरस्वती नदी की शीतल तरंगो वाली वायु के स्पर्श से शारीरिक थकावट तथा जोर से लगी प्यास दूर कर लूंगा। इससे यह ज्ञात होता है कि सरस्वती नदी के जल से जो वायु होकर गुजरती है वह अत्यन्त शीतल और निरोग्य होती है। जिससे व्यक्ति के स्पर्श के आने से प्यास और थकावट दूर हो जाती है। इससे यह सिद्ध होता है कि नदी का जल पर्यावरण की दृष्टि से साफ सूथरा हैं।

8. वन्य प्राणी व जीवजन्तुः पर्यावरण का एक अभिन्न अंग प्राणी जगत भी हैं। प्राणी जगत का उल्लेख वेणीसंहार नाटक में महाकवि भट्टनारायण ने यदा–कदा वर्णन किया हैं,हवा में विचरण करते पक्षी वर्ग–हंस, कौआ,गिद्व,। वन में विचरण करते पशु– बाघ, हाथी, घोडा, सियार, लोमड़ी आदि का उल्लेख मिलता हैं। वन्य प्राणी प्रकृति की शोभा हैं किन्तु आज इनकी संख्या में गिरावट हम सबके लिए गंभीर चुनौति है, कि हम वन्य प्राणियों का संवर्द्वन किस तरह से करे। आज मानव के स्वार्थ के आगे प्राणी जगत भी सुरक्षित नही हैं।

उपसंहारः बौद्धिक जगत के ईश्वर प्रदत्त पदार्थ पर्वत,वन,नदी,सागर सरित इत्यादि बाह्य प्राकृत कहलाते है तथा मानव अन्तः करण अन्तः प्रकृति कहलाता है। भट्टनारायण बाह्य प्रकृति एवं अन्तः प्रकृति में निपुण है उनके नाटक में दोनों प्रकार की प्रकृति का चित्रण अपूर्व वैशिष्ट्य लिये हुए है। महाकवि की कृति में साहित्य की दृष्टि से शोध कार्य किये गये है परन्तु पर्यावरण की दृष्टि से इस पर विचार नही हुआ है। महाकवि द्वारा वर्णित प्रकृति वर्णनों का न केवल साहित्यिक अपितु पर्यावरण की दृष्टि से भी विशेष महत्व है। संस्कृत साहित्य के इतिहास में नाट्य साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है उसी तरह प्रकृति का भी हमारे जीवन में अत्यधिक महत्व है क्योंकि प्रकृति एवं सम्पूर्ण जीव एक–दूसरे के संपूरक है। वेणीसंहार में विभिन्न प्रकार के निर्मल दृश्यों का वर्णन किया गया है प्रकृति के संरक्षण की दृष्टि से भट्टनारायण ने मानव रूपी प्रकृति का अध्ययन किया हैं।

संदर्भ सूची

1. यजुर्वेद 36/9
2. वेणीसंहार नाटक पृष्ठ सं. 343
3. वेणीसंहार नाटक पृष्ठ सं. 95
4. वेणीसंहार नाटक द्वितीय अंक श्लोक– 7
5. वेणीसंहार नाटक प्रथम अंक श्लोक–6
6. वेणीसंहार नाटक द्वितीय अंक श्लोक– 9
7. वेणीसंहार नाटक पृष्ठ सं. 336